एशिया में 63 प्रतिशत बढ़ गया ई-कचरा

drishtiias.com/hindi/printpdf/e-waste-in-asia-has-increased

एशिया में 63 प्रतिशत बढ़ गया ई–कचरा

साल दर साल मोबाइल, लैपटॉप, टेलीविज़न के नए मॉडल लोगों को आकर्षित करते हैं। आर्थिक संपन्नता के चलते पिछले कुछ सालों में इन उपकरणों की बिक्री में वृद्धि हुई है। अब इसका दुष्परिणाम ई–कचरे के रूप में हमारे सामने है। संयुक्त राष्ट्र यूनिवर्सिटी की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक पिछले पाँच साल में एशिया में ई–कचरे में 63 फीसद की वृद्धि हुई है।

4.18 करोड़ टनः वैश्विक ई–कचरा (2014 में)

1.6 करोड़ टनः सर्वाधिक ई–कचरा एशिया में

चीन सबसे आगे

पाँच सालों में चीन ने दोगुना ई–कचरा निकाला है। 2010 में यहाँ से 30 लाख मीट्रिक टन कचरा निकला। 2015 में यह आँकड़ा बढ़कर 67 लाख मीट्रिक टन हो गया। चीन बड़ी मात्रा में ई–कचरे को अवैध रूप से निर्यात भी करता है।

अन्य देशों की स्थिति

- प्रति व्यक्ति ई–कचरा निकालने के मामले में हांग कांग एशिया में पहले स्थान पर है। वहाँ यह आँकड़ा 21.7 किग्रा. है।
- सिंगापुर व ताइवान में यह आँकड़ा 19 किग्रा. है।
- कंबोडिया, वियतनाम और फिलीपींस में प्रति व्यक्ति लगभग एक किग्रा. कचरा निकलता है।

स्वास्थ्य को खतरा

इनमें मौजूद पारा, कैडमियम, क्रीमियम, लेड व सीएफसी जैसे हानिकारक रसायन और एसिड धरती और पानी में मिल जाते हैं। इनसे दिमागी बीमारियाँ, फेफड़ों, लीवर व किडनी को नुकसान हो सकता हैं।

कचरे का ढेर

एशिया में कई सालों से ई–कचरे का निष्पादन किया जा रहा है। यहाँ के इलाकों में इस कचरे के बड़े–बड़े ढेर लगे हुए हैं।

ई–कचरा

- ऐसे इलेक्ट्रिक व इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, जिन्हें दोबारा इस्तेमाल न करके कचरे के रूप में फेंक दिया जाता है। इसमें उपकरणों के अंदरूनी हिस्से भी शामिल हैं।
- रेफ्रिजरेटर, एयरकंडीशनर, हीट पंप, टीवी, कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल, कैमरा, फ्लोरोसेंट लैंप, एलईडी, वाशिंग मशीन, विद्युत संचालित चूल्हा, प्रिंटर, वैक्यूम क्लीनर, माइक्रोवेव व अन्य विद्युत संचालित उपकरण इस श्रेणी में आते हैं।